International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 6, June- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

डॉ. भीमराव अम्बेडकर :हिन्दू धर्म का विश्लेषण

डॉ. दुलारीराम मीना
व्याख्याता (राजनीति विज्ञान)
राजकीय महाविद्यालय, खण्डार

धर्म मानव समाज का प्रारम्भ से ही अभिन्न अंग रहा है, धर्म से ही मानव जीवन की सभी क्रिया नियमित होती है, धर्म की व्याख्या धर्म को मानने वाले और धर्म को नहीं मानने वालों की दृष्टि से अलग–अलग हो सकती है, किन्तु धर्म ने मानव जीवन को गति दी है, दिशा दी है, उसे नियमानुकूल आचरण की प्ररेणा दी है। यही कारण है कि सृष्टि की उत्पत्ति के साथ ही मानव समाज में विभिन्न धार्म का अस्तित्व रहा है। देश, काल और परिस्थितियों के अनुसरा धार्मिक मान्यताओं का विश्लेषण भी होता रहा है। विभिन्न समाज सुधारकों और धर्माचार्यो द्वारा अपनी–अपनी दृष्टि से धर्मो की समीक्षा भी की जाती रही है जिसमें अच्छाईयों के साथ–साथ धर्म में व्याप्त विसंगतियों को भी उजागर किया जाता रहा है।

हिन्दू धर्म भी इसका अपवाद नहीं है। हिन्दू सभ्यता एवं संस्कृति का मूलाधार अध्यात्मवाद से प्ररित हिन्दू धर्म है, जिसने हिन्दू जीवन को न केवल व्यवस्थित वरन् उसका दिशा–निर्देशन भी किया है। हिन्दू धर्म में व्यापकता है समरसता है, जो सदाचार एवं नैतिकता के सभी नियमों को अपने में समाहित किए हुए है। इसी कारण एक हिन्दू ाके लिए हिन्दू धर्म गौरव का प्रतीक हैं।

1. हिन्दू धर्म का विशलेषात्मक चिन्तन

अध्यात्मवाद से प्रेरित हिन्दू धर्म की आधारभूत मान्यताएं विभिन्न हिन्दू धर्म ग्रन्थों में दर्शन के रूप मे स्थापित है। अम्बेडकर ने हिन्दू धर्म के वास्तविक स्वरूप के समझने के लिए वेद, ब्राह्मण ग्रन्थ, उपनिषद्, वेदान्त, पुराण, रामायण, महाभारत, गीता, स्मृतियां, आदि अनेक प्राचीन हिन्दू ग्रन्थों का गहन अध्ययन किया। उन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि ईश्वरवाद, आत्मा–परमात्मा, पुर्नजन्म,

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 6, June- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

भाग्यवाद, वर्ण–व्यवस्था, पूजा, हवन, यज्ञ, पशु–बली, मूर्ति–पूजा, कर्मकाण्ड, अवतारवाद, कर्मफल आदि हिन्दू धर्म के मूल सिद्धान्त हैं। हिन्दू समाज अमानुषिक जाति प्रथा की जननी चातुर्वर्ण पर आधारित हैं तथा ब्राह्मणशाही की हिन्दू धर्म और हिन्दू समाज में सर्वोच्चता है। हिन्दू धर्म की व्यवस्थाओं के अनुसार ही आचरण करना धर्म है, इसके विपरीत किया गया आचरण अधर्म। इस आधार पर अम्बेडकर ने निष्कर्ष निकाला कि हिन्दू धर्म नियमों का संग्रह है, जो व्यक्ति को कुछ करने के लिए या कुछ न करने के लिए उपदेश देता है।

अम्बेडकर के अनसार यह भारत का दुर्भाग्य ही है कि यहॉ धर्म को सबसे जटिल बनाकर रखा गया है, जिसका परिणाम यह हुआ कि जो धर्म इन्सान की समस्याओं को हल करता है, वह स्वयं इन्सान के लिए एक समस्या बन गया।[1] इसलिए उनके विचार में हिन्दू धर्म सच्चा धर्म नहीं है। प्रचलित हिन्दू धर्म ग्रन्थों में जो धर्म का स्वरूप मिलता है वह निषेधों और विधानाओं के समूह के सिवा और कुछ नहीं है। आध्यात्मिक सिद्धान्तों के अर्थ में धर्म वह है जो सार्वभौमिक हों, जो सभी मानव–वंशों सभी देशों और सभी कालों पर लागू हो सकें, इस दृष्टि से धम्य सदाचार है जिसका अर्थ है जीवन के सभी क्षेत्रों में मानव–मानव के बीच शुभ सम्बन्ध।2 किन्तु यह हिन्दू धर्म में नही मिलता और यदि यह उनमें है तो हिन्दू के जीवन पर इसका कोई प्रभाव नहीं। हिन्दू के लिए धर्म का अर्थ विधि और निषेध हैं।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 6, June- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

संदर्भः–

1. एल.आर बाली : डॉ. अम्बेडकर जीवन ओर मिशन, 1992 पृ.20
2. डी.आर. जाटव' बी.आर. अम्बेडकर का राजनीति दर्शन 1990 पृ. 37
3. धनंजय कीरः डॉ. अम्बेडकर लाईफ एण्ड मिशन, 1991, पृ. 502
4. ''वही''–पृ. 259
5. एल.आर.बालीः डॉ. अम्बेडकर ने क्या किया, 1991, पृ. 204
6. धनंजय कीर : डा. अम्बेडकर लॉईफ एण्ड मिशन, 1991 पृ. 305
7. ''वही''–पृ. 275
8. बी.आर. अम्बेडकरः मि. गांधी एण्ड द् इमैन्सीपेशन ऑफ द् अनटचेबिल्स, 1943, पृ. 39
9. डी.आर. जाटव : डॉ. बी.आर. अम्बेडकर व्यक्तिगत और कृतित्व, 1993, पृ. 204
10 बी.आर. अम्बेडकरः एनीहिलेशन ऑफ कास्ट, 1970, पृ. 96
11. कंवल भारतीः डॉ. अम्बेडकर बौद्ध क्यों बने, 1983 पृ. 85
12. ''वही''–पृ. 86
13. डॉ. आर. जाटवः डॉ. बी.आर. अम्बेडकर व्यक्तिगत और कृतित्व, 1993, पृ. 207
14. विश्व प्रकाश गुप्ता, मोहनी गुप्ता, भीमराव अम्बेडकर व्यक्ति और विचार, 1997, पृ. 110
15. डी.आर. जाटव : बी.आर. अम्बेडकर का राजनीति दर्शन, 1990 पृ. 33–34
16 धनंजय कीर : डा. अम्बेडकर लॉईफ एण्ड मिशन, 1991 पृ. 92
17. बी.आर. अम्बेडकरः एनीहिलेशन ऑफ कास्ट, 1937, पृ. 125
18. डी.आर. जाटव : बी.आर. अम्बेडकर का राजनीति दर्शन, 1990 प. 37
19 डी.आर. जाटव : बी.आर. अम्बेडकर का राजनीति दर्शन, 1990 पृ. 39
20. सत्यनारायणः बाबा साहिब डॉ. भीमराव अम्बेडकर 1992, पृ. 47